



GEOGRAPHY

Test-1

OPT^{DTVF}-23 G-2301

Time Allowed: Three Hours

Maximum Marks : 250

Name: Jatin Kumar

Mobile Number:

Medium (English/Hindi): Hindi

Reg. Number: _____

Center & Date: Online – 09.08.2023

UPSC Roll No. (If allotted):

QUESTION PAPER SPECIFIC INSTRUCTIONS

Please read each of the following instruction carefully before attempting questions:

There are **EIGHT** questions divided in **TWO SECTIONS** which are printed in **ENGLISH**.

Candidate has to attempt **FIVE** questions in all.

Questions no. **1** and **5** are compulsory and out of the remaining, any **THREE** are to be attempted choosing at least **ONE** from each section.

The number of marks carried by a question/part is indicated against it.

Answers must be written in the medium authorized in the Admission Certificate which must be stated clearly on the cover of this Question-cum-Answer (Q.C.A.) Booklet in the space provided. No marks will be given for answers written in a medium other than the authorized one.

Word limit in questions, wherever specified, should be adhered to.

Illustrate your answers with suitable sketches/maps and diagrams, wherever considered necessary. These shall be drawn in the space provided for answering the question itself.

Attempts of questions shall be counted in sequential order. Unless struck off, attempt of a question shall be counted even if attempted partly. Any page or portion of the page left blank in the Question-cum-Answer Booklet must be clearly struck off.

Q. No.	a	b	c	d	e	Total Marks	Q. No.	a	b	c	d	e	Total Marks
1	4.5	3.5	4.5	4	0.5		5	4.5	4	4	4.5	3.5	
2	9	6.5	6.5				6	10	6.5	6.5			
3							7						
4							8	9	6	6.5			
						Grand Total							

D01305

Evaluator (Signature)

104

Reviewer (Signature)

1. Context Proficiency
3. Content Proficiency
5. Conclusion Proficiency

2. Introduction Proficiency
4. Language/Flow
6. Presentation Proficiency

-
- संदर्भ की समझ होक है
 - भूमिका का उपयोग सिद्ध लक्षण है
 - विषयवस्तु की समझ होक है
इसे उपयोग केन्द्र करे
 - संख्यान शैली होक है
 - निष्कर्ष में अविषय की उपस्थिति शामिल करे
 - प्रस्तावना संख्या है

(Please do not write anything except the question number in this space)
कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

UPSC

Answer Questions in NOT MORE THAN the Word Limit specified for each in the Parenthesis.
Content of the Question is more important than length.
(Specimen Answer Booklet - For Practice Purpose Only)

उम्मीदवारों को इस हाशिए में नहीं लिखना चाहिए।
Candidates must not write on this margin.

3 1. पृथ्वी की सतह के विभिन्न उच्चावचों पर उपयुक्त उदाहरणों के साथ संक्षिप्त टिप्पणी कीजिये।

(a)

~~जोड़ना
हीक~~

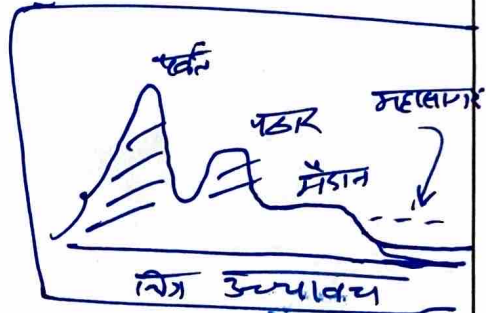
~~उच्चावच के आशय पृथ्वी पर विद्यमान विभिन्न स्थलाकृतियों के हैं जैसे - पर्वत, पठार मैदान आदि~~

① प्रथम क्रम की स्थलाकृति :-

(i) महासागर -

- पृथ्वी पर प्रशांत, अटलांटिक आदि महासागर

- सम्पूर्ण पृथ्वी का 70%.
- महासागरों में - कैनियन, गोंगर, द्वीप-चप्ट आदि



(ii) महाद्वीप :-

- पृथ्वी पर एशिया, अफ्रीका आदि
- पृथ्वी के 30% धरातल पर
- जनसंख्या - मानव का निवासस्थान

② द्वितीय क्रम की उच्चावच :-

- (i) पर्वत :- 700 मी. से अधिक ऊँचे उदा. - हिमालय, अरवली आदि

~~विना
हीक~~

(Please do not write anything except the question number in this space)
 कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

UPSC

Answer Questions in NOT MORE THAN the Word Limit specified for each in the Parenthesis.
 Content of the Question is more important than length.
 (Specimen Answer Booklet - For Practice Purpose Only)

उम्मीदवारों को इस दफ्तार में नहीं लिखना चाहिए!
 Candidates must not write on this margin.

(ii) पठार - पर्वतों के अपसरण द्वारा निर्मित
 - ऊँचाई 700 मी. से कम
 - जैसे: तिब्बत का पठार आदि

अपसरण
 इन्फ्लेक्शन
 अंगूठा वाली

दिखा दीजिए
 क्या ही कहेंगे

(iii) मैदान - सर्वाधिक उपजाऊ क्षेत्र
 - जनसंख्या घनत्व अधिक
 - सामान्यतः नदी निर्मित
 - उदा. - गंगा का मैदान

निर्माण
 अंतरफलक
 एक पटल

(3) तृतीय क्रम की स्थावर
 - अपसाय, परिवहन एवं निक्षेपण से निर्मित
 - उदा. - डेल्टा, ड्रमलिन, मोनाडॉक, इन्फ्लेक्शन आदि

विशेषज्ञों
 वस्तु के कारण
 दोस्तों

पृथ्वी का उच्चावच ही पृथ्वी की विशिष्टता है जिसके कारण भिन्न जलवायु एवं गूडीय शक्यताएं पायी जाती हैं।

4.5
 10

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें!

UPSC

Answer Questions in NOT MORE THAN the Word Limit specified for each in the Parenthesis.
Content of the Question is more important than length.
(Specimen Answer Booklet - For Practice Purpose Only)

उम्मीदवारों को इस हाशिए में नहीं लिखना चाहिए!
Candidates must not write on this margin.

1
6

भूकंपों से संबंधित "प्रत्यास्य पुनश्चलन सिद्धान्त" पर संक्षिप्त टिप्पणी लिखिए।

2 मिनिट
लिखें

भूकम्प से आशय भूपर्पटी के कंपन है। यह मानवीय अथवा प्राकृतिक कारकों का उत्पन्न हो सकता है। 2/3 भूकम्प प्रशांत महासागरीय क्रेटी में आते हैं।

प्रत्यास्य पुनश्चलन सिद्धान्त:-

- इस सिद्धान्त के अनुसार भूकम्प विशिष्ट प्लेटों के आपसी संघर्ष एवं टकराव का उत्पन्न है।
- जब ये प्लेटें संचरित होती हैं तो एक जगह पर अचानक ऊर्जा का संचरण हो जाता है।
- इस ऊर्जा को निरखने के लिए भूकम्प का सहारा लेना पड़ता है।
- यह ऊर्जा तरंगों के रूप में पृथ्वी पर संचरित होती है - P, S, L तरंग

यह सिद्धान्त सही है।

(Please do not write anything except the question number in this space)
 कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें!

UPSC

Answer Questions in NOT MORE THAN the Word Limit specified for each in the Parenthesis.
 Content of the Question is more important than length.
 (Specimen Answer Booklet - For Practice Purpose Only)

उम्मीदवारों को इस हाशिए में नहीं लिखना चाहिए!
 Candidates must not write on this margin.

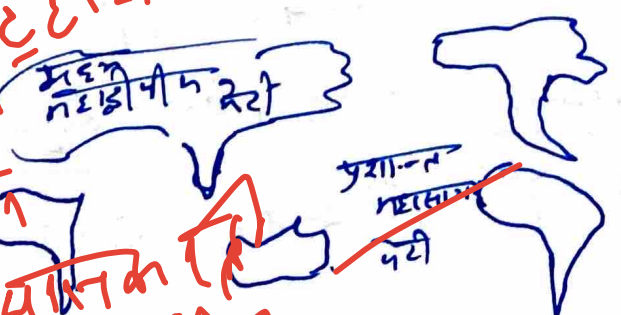
Handwritten notes in red ink:
 फ्लूइड ड्राइव
 चट्टानों के खंडों की तुलना
 प्लेटों के बीच
 चट्टानों के खंडों की तुलना
 प्लेटों के बीच
 चट्टानों के खंडों की तुलना
 प्लेटों के बीच
 चट्टानों के खंडों की तुलना
 प्लेटों के बीच
 चट्टानों के खंडों की तुलना
 प्लेटों के बीच
 चट्टानों के खंडों की तुलना
 प्लेटों के बीच

प्लेटें चरेंगे बॉडी चरेंगे होती है
 एवं L व R के चरण स्थलीय
 चरणों।
 5 चरणों केवल डोर में स्फुरण
 करती है एवं P चरण ध्वनि
 चरणों की तरह डिस्की भी माइक्रो
 में गति कर सकती है।

पद सिद्धान्त भूकम्प के बाद
 प्लेटों के घुम: अपनी अवस्था
 में आने को भी सन्दर्भित
 करता है जिसे प्रत्यास्था
 कहते हैं।

भूकम्प का मापन सिस्मोग्राफ
 द्वारा किया जाता है।

भूकम्प के धरातल पर
 प्रभाव होते हैं जिन्हें
 जमीनी वार्निंग सिस्टम एवं सैफिटी
 द्वारा कम किया जा सकता है।



Handwritten score in red ink:
 3.5 / 10

(Please do not write anything except the question number in this space)
कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें!

UPSC

Answer Questions in NOT MORE THAN the Word Limit specified for each in the Parenthesis.
Content of the Question is more important than length.
(Specimen Answer Booklet - For Practice Purpose Only)

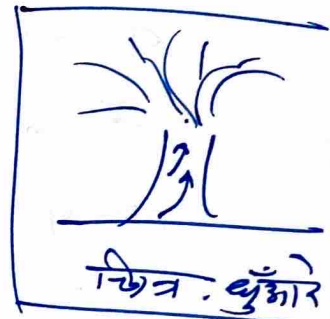
उम्मीदवारों को इस हाशिए में नहीं लिखना चाहिए!
Candidates must not write on this margin.

धुँआँरे / धूमरेल पर संक्षिप्त टिप्पणी लिखिये।

ज्वालामुखी से निकलने वाले धुँआँ अथवा जैसीय पदार्थों के कारण किसी क्षेत्र में धुँआँरे उत्पन्न होते हैं।

धुँआँरों का विकास -

- ज्वालामुखी विस्फोटक
- भौमा का निकलना
- जैसों का निकलना



धुँआँरों का प्रभाव :-

1. हानिकारक जैसों जैसे CO_2 , मैथेन आदि का निष्कासन
2. किसी क्षेत्र के तापीय संतुलन को बनाए रखने में
3. भूलासना में हजारों धुँआँरों की धारी हैं जिसमें समय-समय

(Please do not write anything except the question number in this space)
कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें!

UPSC

Answer Questions in NOT MORE THAN the Word Limit specified for each in the Parenthesis.
Content of the Question is more important than length.
(Specimen Answer Booklet - For Practice Purpose Only)

उम्मीदवारों को इस हाशिए में नहीं लिखना चाहिए!
Candidates must not write on this margin.

~~जुआ~~
~~विश्व~~
~~का~~
~~जुआ~~

गैसीय पदार्थ निकलते रहते हैं।
4. रहने वाली जनसंख्या पर प्रभाव

5. वायुमण्डलीय गैसीय संतुलन में परिवर्तन

6. धुँआरो का प्रभाव अत्यधिक दूर तक होता है

7. ज्वालामुखी के कारण धुँआरो में कई तरह के खतरनाक तत्वों का मिश्रण भी होता है जैसे - लैंड आदि जिसका वातावरण में फैलाव हो जाता है।

धुँआरे वायुमण्डल को प्रभावित करते हैं। अतः ज्वालामुखी के प्रभावों पर निगरानी रखने की आवश्यकता है।

कहते हैं कि लान्ड आदि फैलते हैं

4.5
10

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें!

UPSC

Answer Questions in NOT MORE THAN the Word Limit specified for each in the Parenthesis.
Content of the Question is more important than length.
(Specimen Answer Booklet - For Practice Purpose Only)

उम्मीदवारों को इस हाशिए में नहीं लिखना चाहिए!
Candidates must not write on this margin.

1
d

पॉलिम्पसेस्ट स्थलाकृति के विकास पर संक्षिप्त टिप्पणी लिखिये।

स्पष्ट भूमिका लिखने का सुझाव

पॉलिम्पसेस्ट स्थलाकृति वह स्थलाकृति होती है जिसका भू-विकास अपूरण एवं निक्षेपण द्वारा परिवर्तन हुआ होता है।

विकास :-

- इस तरह की स्थलाकृति सामान्यतः एक लम्बे समय (लाखों वर्ष) की प्रतिक्रियाओं का परिणाम है।

1. चरण - 1 → स्थलाकृति के अपूरण द्वारा धीरे-धीरे एक समतल मैदान शेष या पेनीप्लेन की संकल्पना जन्म लेती है।

2. चरण - 2 - इस अवस्था के पेनीप्लेन पर कुछ इन्सेलवर्ग वर्ण रहते हैं जिन्का नष्ट होना प्रारम्भ

(Please do not write anything except the question number in this space)
 कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें!

UPSC

Answer Questions in NOT MORE THAN the Word Limit specified for each in the Parenthesis.
 Content of the Question is more important than length.
 (Specimen Answer Booklet - For Practice Purpose Only)

उम्मीदवारों को इस हाशिए में नहीं लिखना चाहिए!
 Candidates must not write on this margin.

है। जन्मा है एवं अन्ततः केवल एक समुदाय मैदान ही शेष बचता है।

1) लिम्पसेस्ट

भू-सूक्ष्म

निर्माण विभिन्न

आपकी

3. चरण-3 - मैदान के पुनःउत्थान की क्रिया आरम्भ होती है एवं अन्तःजात क्लों के उन्नत नवीन स्थलाहृतियों का विकास होता है।

विभिन्न

क्रांतिक

में

लोकेशन

स्थलाहृतियों का विकास → अपरदन + परिवहन + निक्षेपण

पॉलिम्पसेस्ट

इन्सेलर्बि + पैनीप्लेन का निर्माण

किस तरह पॉलिम्पसेस्ट बनते व बिगड़ते रहते हैं यह एक स्थान की प्राचीनतम अवस्था से अब तक जानने की अवधारणा है जिससे द्वारा किसी स्थान का विशाल अध्ययन सम्भव हो पाता है।

9/10

विषयगत

लगातार

का उत्तर
 - उत्तर पर
 एकत्र

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें!

UPSC

Answer Questions in NOT MORE THAN the Word Limit specified for each in the Parenthesis.
Content of the Question is more important than length.
(Specimen Answer Booklet - For Practice Purpose Only)

उम्मीदवारों को इस हाशिए में नहीं लिखना चाहिए!
Candidates must not write on this margin.

①
②

परिहिमानी प्रक्रम की क्रियाविधि को संक्षेप में बताइये।

~~प्रभावी नुस्खा लिखें~~

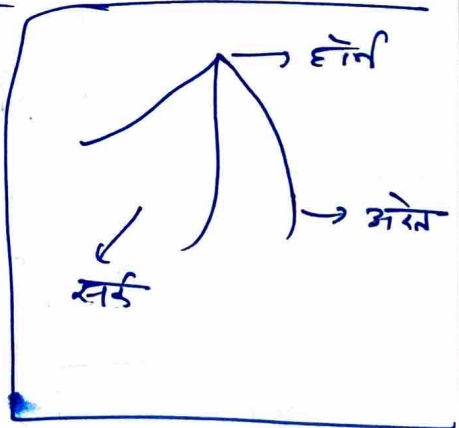
परिहिमानी प्रक्रम से आशय ग्लेशियर अथवा हिमानी से होने वाले प्रक्रमों द्वारा पृथ्वी पर पड़ने वाले प्रभावों से है।

① अपरदन द्वारा प्रभाव :-

- अपरदन द्वारा प्रक्रम से कुछ स्थलाकृतियों का विरास होता है

(i) सर्व - हिमानी द्वारा

जिस क्षेत्र से परिच्छन्न किया जाता है उसे सर्व कहते हैं।



(ii) हॉर्न - हॉर्न उभा

आकार सर्व से निर्मित क्षेत्र के संयुग्मन से निर्मित होता है

उदा - मेटरहॉर्न

(iii) अरेत - सर्व की भूभागों को अरेत कहते हैं।

फिओर्ड - जब हिमानी निर्मित स्थलों में समुद्री जल भर जाता है तो इसे फिओर्ड कहते हैं।
सामान्यतः समुद्री वर्षा

~~क्याला कृतियों का वर्णन नहीं करेंगे~~

(Please do not write anything except the question number in this space)
 कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या को अतिरिक्त कुछ न लिखें!

UPSC

Answer Questions in NOT MORE THAN the Word Limit specified for each in the Parenthesis.
 Content of the Question is more important than length.
 (Specimen Answer Booklet - For Practice Purpose Only)

उम्मीदवारों को इस हाशिए में नहीं लिखना चाहिए!
 Candidates must not write on this margin.

क्षेत्रों में मिलते हैं

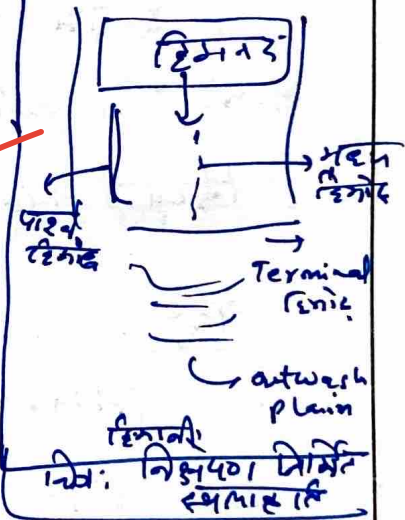
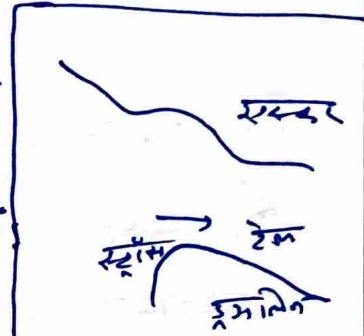
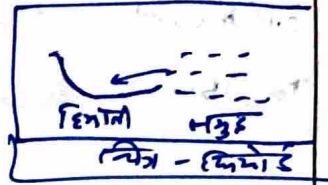
② निक्षेपण द्वारा निर्मित :-

(i) एस्कर - जब हिमनद के किसी क्षेत्र से जल निकलने लग जाये तो हिमनद के कुछ जाने के बाद वहाँ अनुप्रवाह की शृंखला शेष रह जाती है जो एस्कर कहलाता है।

(ii) ड्रमलिन :- अवसादों के जमाव के कारण हिमनद की गतिशील दिशा में बड़े-बड़े ढाल वाला क्षेत्र बनता है जिसे ड्रमलिन कहते हैं।

(iii) हिमोद - हिमानी अवसादों के निक्षेप से - अन्तःस्थ, तापस्थ, मध्यस्थ हिमोद

(iv) outwash plain



~~लिख~~

~~कल~~

~~गुह का~~

~~माडल ड ले~~

~~अवस्था~~

~~दुख~~

0.5
10

उत्तर: हिमनद किसी क्षेत्र के

निकास एवं प्रतिदर्शी की स्थिति के महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है जिसके शाल में वृद्धि देखी गयी है।

(Please do not write anything except the question number in this space)
कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें!

UPSC

Answer Questions in NOT MORE THAN the Word Limit specified for each in the Parenthesis.
Content of the Question is more important than length.
(Specimen Answer Booklet - For Practice Purpose Only)

उम्मीदवारों को इस हाशिए में नहीं लिखना चाहिए!
Candidates must not write on this margin.

② ①

अनाच्छादन कालानुक्रम की अवधारणा का समालोचनात्मक विश्लेषण कीजिए।

भूतिका
की

~~अनाच्छादन कालानुक्रम के आशय किसी विशेष स्थल की स्थलाकृतियों के विकास एवं विनाश के बारे में अध्ययन करना इसके तहत ऊन:जात व बहिर्जात बलों के सम्मिलित प्रभावों का अध्ययन रिया जाता है।~~

धटक:-

1. वर्तमान भूतकाल की कुल है
2. पॉलिम्पलेस्ट स्थलाकृति
3. पृथ्वी में वारम्बार परिवर्तन

अनाच्छादन कालानुक्रम :-

1. प्रत्यक्ष स्रोतों द्वारा :-

- समस्त उपलब्ध स्थलाकृतियों के विश्लेषण द्वारा किसी निरन्तर या पट्टियों जाता है।

(Please do not write anything except the question number in this space)
कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें!

UPSC

Answer Questions in NOT MORE THAN the Word Limit specified for each in the Parenthesis.
Content of the Question is more important than length.
(Specimen Answer Booklet - For Practice Purpose Only)

उम्मीदवारों को इस हाशिए में नहीं लिखना चाहिए!
Candidates must not write on this margin.

~~31 मार्च 2014 को 31व्यां अवसर पर आयोजित किया गया है कि इसी कारण से विकास के विभिन्न चरणों को गुंथना उपयुक्त है।~~

~~2. प्रत्यक्ष लोगों द्वारा -~~

- सूचना देरिंग निधि से C-14 के उपयोग द्वारा
- पूर्ण निजी क्षेत्र का उपयोग करते
- लक्ष्य बनाने के
- श्रमस्थीय तंत्रों के प्रभाव एवं गति के अध्ययन द्वारा
- तकनीकी उपकरणों से सिमुलेशन विद्या द्वारा

अनाच्छादन कालानुक्रम की प्रक्रिया :-

- इस प्रक्रिया में किसी विशेष स्थल के बारे में वर्तमान को श्रमकाल की कुंजी मानकर अध्ययन किया जाता है।

(Please do not write anything except the question number in this space)
कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें!

UPSC

Answer Questions in NOT MORE THAN the Word Limit specified for each in the Parenthesis.
Content of the Question is more important than length.
(Specimen Answer Booklet - For Practice Purpose Only)

उम्मीदवारों को इस हाशिए में नहीं लिखना चाहिए!
Candidates must not write on this margin.

- वर्तमान में उपस्थित विभिन्न परिदृश्यों की इस तरह अनुत्पत्ति हुई एवं भाविष्य में इस तरह विनाश होगा।
- पॉलिम्पसेस्ट का आशय उस हस्तलिपि है जो जिसे बार-बार लिखा व बार-बार पिराया जाता है। पॉलिम्पसेस्ट स्थलाहति को भी पृथ्वी की उसी स्थलाहति की तरह समझा जाता है।
- पृथ्वी पर विविध शील हैं एवं इसमें समयानुक्रम अनच्छादन प्रक्रम होता है जिसमें शामिल है - अपरदन, निक्षेपण व परिवहन प्रक्रिया।
- इस प्रक्रिया से इस क्षेत्र के बारे में शक प्रविद्ध करने का प्रयास किया जाता है एवं उसके आधार पर अन्य क्षेत्रों का वर्णन किया जाता है।

(Please do not write anything except the question number in this space)
 कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें!

UPSC

Answer Questions in NOT MORE THAN the Word Limit specified for each in the Parenthesis.
 Content of the Question is more important than length.
 (Specimen Answer Booklet - For Practice Purpose Only)

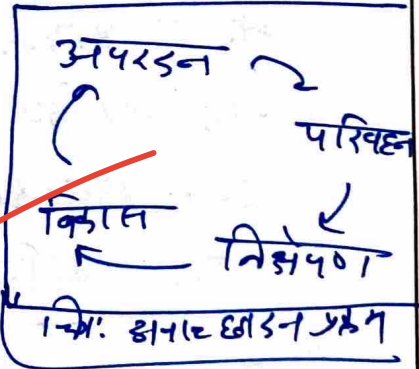
उम्मीदवारों को इस हाशिए में नहीं लिखना चाहिए!
 Candidates must not write on this margin.

शोषण :-

1. यह इस स्थान पर काम करता है कि सभी स्थलाकृतियों का निर्माण समान प्रकृति से हुआ है जबकि द्विगिनिस के अनुसार कोई ऐसा स्थलाकृतिक ढांच नहीं है जिसे आधार पर सभी स्थलाकृतियों का निर्माण हुआ हो।

2 यह व्यक्ति की निगमनात्मक शक्ति को अधिक महत्व देता है।

3 इस सिद्धान्त के आधार पर सिद्ध करने के लिए लोको वर्गों का समग्र वर्णन किया जाता है।



शत : का अनाच्छादन आनुक्रमिक एक निरन्तर प्रक्रिया है जो पृथ्वी के समग्र धरातल को बनाने में व दिगाइने में अहम भूमिका निभाती है।

समान प्रकृति की वृत्त आकृति का कारण है।
 लोको वर्ग का वर्णन किया जाता है।
 लोको वर्गों का समग्र वर्णन किया जाता है।
 लोको वर्गों का वर्णन किया जाता है।

9
 2:0

(Please do not write anything except the question number in this space)
कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें!

UPSC

Answer Questions in NOT MORE THAN the Word Limit specified for each in the Parenthesis.
Content of the Question is more important than length.
(Specimen Answer Booklet - For Practice Purpose Only)

उम्मीदवारों को इस हाशिए में नहीं लिखना चाहिए!
Candidates must not write on this margin.

2) नदी धारियों के निर्माण के विभिन्न चरणों तथा इनके विकास में शामिल प्रमुख गतिविधियों पर चर्चा कीजिये।

नदी धारियों का विकास समतानु रूप परिवर्तित होता रहता है जो कि नदी के बेज, पुनः एवं जल की मात्रा पर निर्भर करता है।

नदी धारी का निर्माण के चरण :-

1. युवावस्था चरण :-

- नदी अपने प्रारम्भिक अवस्था में
- नदी का बेज एवं जलोप भार अधिक
- इस अवस्था में शीर्षवर्ती अपरदन द्वारा यथा दीर्घकाल होता है।

नदी अपनी ऊर्जा से धारी बन करती है जिसे 'V' आकार की धारी का निर्माण होता है।

- इस अवस्था में नदी सीधी चलती है एवं पार्श्विक अपरदन प्रमुख किया जाता है।

शुद्धि
गुणवत्

धारी का

गहरी
होता

विषय
शुद्धि

(Please do not write anything except the question number in this space)
 कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें!

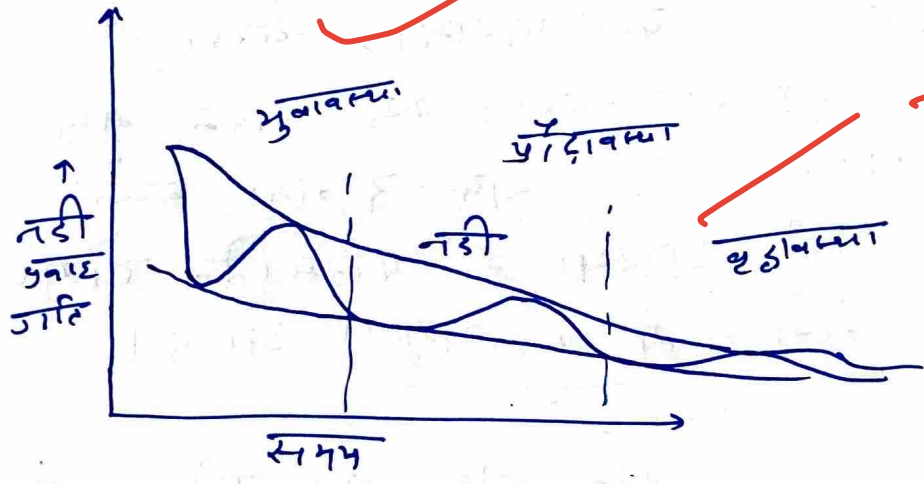
UPSC

Answer Questions in NOT MORE THAN the Word Limit specified for each in the Parenthesis.
 Content of the Question is more important than length.
 (Specimen Answer Booklet - For Practice Purpose Only)

उम्मीदवारों को इस हाशिए में नहीं लिखना चाहिए!
 Candidates must not write on this margin.

2. पौढ़ावस्था परण :-

- इस अवस्था में नदी में 'अवसाद' की मात्रा अधिक हो जाती है।
- नदी पार्श्विक अपरदन करने लगती है।
- शीर्षवर्ती अपरदन के वृत्त नदी धारणियों के निर्माण में रुकी जा देता है।



3. शुद्धावस्था :-

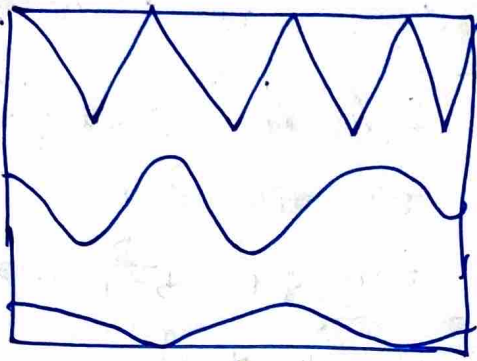
- नदी में 'अवसाद' की अत्यधिक मात्रा
- गतिज ऊर्जा न्यूनतम
- धारी कर्तन लगभग समाप्त
- पार्श्विक अपरदन द्वारा अवसाद का निक्षेपण
- डेल्टा का निर्माण
- नदी 'विमर्षों' का निर्माण

(Please do not write anything except the question number in this space)
 कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें!

UPSC

उम्मीदवारों को इस हाशिए में नहीं लिखना चाहिए!
 Candidates must not write on this margin.

Answer Questions in NOT MORE THAN the Word Limit specified for each in the Parenthesis.
 Content of the Question is more important than length.
 (Specimen Answer Booklet - For Practice Purpose Only)



युवावस्था
 प्रौढ़ावस्था
 वृद्धावस्था

नदी विकास के चरण

- नदी अपने प्रारम्भिक चरण से आन्तिक चरण तक अपनी वृद्धिशील अवस्था से अवसाद जमा करने वाली अवस्था में परिवर्तित होती है। जैसे - गंगा, यमुना आदि।

विषयवस्तु
 का
 लक्ष्य
 है

अतः नदी का विकास सम्पूर्ण नदी बेसिन में प्रारम्भिक किन्तु से लेकर अन्त तक नदी प्रवाह के निरन्तर होता है।

6.5 / 15

(Please do not write anything except the question number in this space)
 कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें!

UPSC

Answer Questions in NOT MORE THAN the Word Limit specified for each in the Parenthesis.
 Content of the Question is more important than length.
 (Specimen Answer Booklet - For Practice Purpose Only)

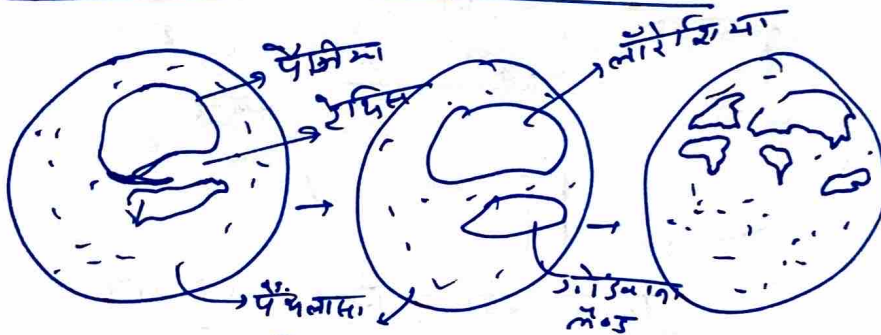
उम्मीदवारों को इस हाशिए में नहीं लिखना चाहिए!
 Candidates must not write on this margin.

2 C

महाद्वीपीय विस्थापन सिद्धांत, सागर निलत प्रसरण सिद्धांत की तुलना में पृथ्वी में अधिक काल्पनिक है। क्या कीजिये।

महाद्वीपीय विस्थापन सिद्धांत वेग्लर द्वारा 1912 में प्रतिपादित किया गया जबकि सागरनिलत प्रसरण सिद्धांत हरी हेस व डिज द्वारा प्रतिपादित किया गया।

महाद्वीपीय विस्थापन सिद्धांत :-



चित्र: महासागरीय विस्थापन

- सम्पूर्ण स्थल खण्ड पैजिमा एवं समुद्री जल पैथलासा के रूप में विस्तृत था। इनके बीच टैपिक भूलनति थी।

समयांतराल के पैजिमा के टूटने से लॉरेशिया व गोडवाना लैंड बने। इनका विस्तार पश्चिमी एवं भूमध्य रेखा की ओर हुआ।

- इस तरह सभी विस्थापित भूखण्ड पहले एक ही पैजिमा भाग का हिस्सा थे।
 - ज्वारीय व गुरुत्वाकर्षण बल के प्रभाव के

मैजिक
 टिक
 5

विभाग
 टिक

(Please do not write anything except the question number in this space)
 कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें!

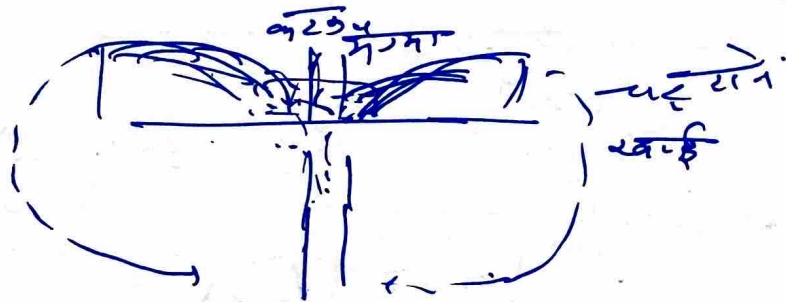
UPSC

Answer Questions in NOT MORE THAN the Word Limit specified for each in the Parenthesis.
 Content of the Question is more important than length.
 (Specimen Answer Booklet - For Practice Purpose Only)

उम्मीदवारों को इस हाशिए में नहीं लिखना चाहिए!
 Candidates must not write on this margin.

सागर निलय प्रसरण :-

- कटक के दोनों ओर शान्तरिक पृथ्वी भाग से मैग्मा निकलता रहता है एवं कटक के दोनों ओर जमा होता है।
- कटक से खार्ड की ओर जाने पर मैग्मा पुनः कोर में खला जाता है।
- कटक से खार्ड की ओर चट्टानें गभीर से पुरानी होती जाती हैं।



चित्र: सागर निलय प्रसरण

~~महासागरीय विस्थापन सिद्धान्त; सागर निलय प्रसरण की तुलना में धार्मिक कल्पनात्मक क्यों?~~

वे जानना माना की कि है कि महासागरीय विस्थापन का लोहा एक भौतिक है

महासागरीय विस्थापन

जिग-सा फ्लि की थोरी दर महासागरीय के लिए समित नहीं होती।

सागर निलय प्रसरण

- हर कटक के दोनों ओर चट्टानें त्रिन्न-त्रिन्न भाग्य की ही पंजी जाती हैं।

उत्त उत्पत्तिक कार्यान्वयन

UPSC

(Please do not write anything except the question number in this space)
कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें!

Answer Questions in NOT MORE THAN the Word Limit specified for each in the Parenthesis.
Content of the Question is more important than length.
(Specimen Answer Booklet - For Practice Purpose Only)

उम्मीदवारों को इस हाशिए में नहीं लिखना चाहिए!
Candidates must not write on this margin.

2. भूनेक पर्वत निर्माण
उद्दिष्टों एवं पर्वतों
की उत्पत्ति के बारे
में विवरण देने में
लक्ष्य
जैसे - सतपुड़ा (भारत)

- प्लेट विवर्तनीय
सहायता से लगभग
सभी पर्वतों के निर्माण
की व्याख्या करने में
लक्ष्य

3. ज्वारीय व गुरुत्वाकर्षण
बलों द्वारा महाद्वीपीय
विस्थापन को सिद्ध
करना उन्हावी नहीं
है

3. संवहनीय धाराओं
की उत्पत्ति के द्वारा
लगभग सभी
स्थलाकृतिक प्रक्रमों
एवं भूकम्प, ज्वालामुखी
को समझाने में
लक्ष्य

4. जीवों की विभिन्न
महाद्वीपों पर
उपस्थिती पर
जाती हैं
जैसे - मीसोकोरस

4. भू-सुरक्षित्व के
दुपयोग से भ्रमार्त
से परीक्षण संभव

कॉटेड की
लाभ है
महाद्वीपीय विस्थापन सिद्धान्त
के अर्थ में महाद्वीपों की वर्तमान स्थिति
के बारे में हमें विवरण प्रस्तुत किया है
वहीं सागर तल, सागरीय करक एवं
चट्टानों की शरीर व्याख्या करने में
लक्ष्य है।

6.5
1.5

(Please do not write anything except the question number in this space)
कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें!

UPSC

Answer Questions in NOT MORE THAN the Word Limit specified for each in the Parenthesis.
Content of the Question is more important than length.
(Specimen Answer Booklet - For Practice Purpose Only)

उम्मीदवारों को इस हाशिए में नहीं लिखना चाहिए!
Candidates must not write on this margin.

5 a

राजमार्गों के निर्माण में भू-आकृति विज्ञान की भूमिका पर चर्चा कीजिये।

परिचय
उत्तर
24

भू-आकृति विज्ञान के प्रयोग एवं उचित अध्ययन का उपयोग मानव निर्मित क्षेत्रों जैसे - संसाधनों का श्रेष्ठतम उपयोग, आपदा सुबंधन एवं राजमार्गों के निर्माण में करता आता है।

राजमार्गों के निर्माण में भू-आकृति विज्ञान

1. उचित स्थलाकृति का चयन:-

- मैदानी भागों में निर्माण श्रेष्ठ
- नदी धारी एवं पहाड़ी क्षेत्रों में निर्माण से भूमि असंतुलन संभव

2. भूकम्प प्रवृत्ति क्षेत्रों के बारे में निर्णय:-

~~भू-आकृति भूकम्प प्रवृत्ति क्षेत्रों के बारे में जागरूक करता है।~~
~~उच्च स्थानों पर राजमार्ग निर्माण~~

~~विकासशील क्षेत्रों में अधिक~~
~~गतिविधि विज्ञान~~
~~मैदान~~
~~आर्थिक~~
~~उत्पन्न~~
~~कृषि~~

(Please do not write anything except the question number in this space)
कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें!

UPSC

Answer Questions in NOT MORE THAN the Word Limit specified for each in the Parenthesis.
Content of the Question is more important than length.
(Specimen Answer Booklet - For Practice Purpose Only)

उम्मीदवारों को इस हाशिए में नहीं लिखना चाहिए!
Candidates must not write on this margin.

3. आनश्यक पदार्थों के बारे में -

- आर्द्रिक भू-विज्ञान जो भू-आकृति का भाग है

- आनश्यक खजरी, रोड़ी आदि के बारे में एवं उपलब्धता के बारे में सूचना

4. पर्यावरण प्रदूषण की आवश्यकता:-

- ~~निश्चित प्रक्रमों - अपरदन एवं निक्षेपण के बारे में जागरूकता~~

जल प्रदूषण के बारे में जागरूकता

अपरदन एवं अपनयन के बारे में करना

वायु प्रदूषण के बारे में जागरूकता

भू-आकृति विज्ञान कृषि, जल विज्ञान समेत अनेक खेतों में अपनी कामकारी भूमिका निभा सकता है जिसके लिए हमें गहरी समझ की आवश्यकता है।

4.5
10

(Please do not write anything except the question number in this space)
 कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें!

UPSC

Answer Questions in NOT MORE THAN the Word Limit specified for each in the Parenthesis.
 Content of the Question is more important than length.
 (Specimen Answer Booklet - For Practice Purpose Only)

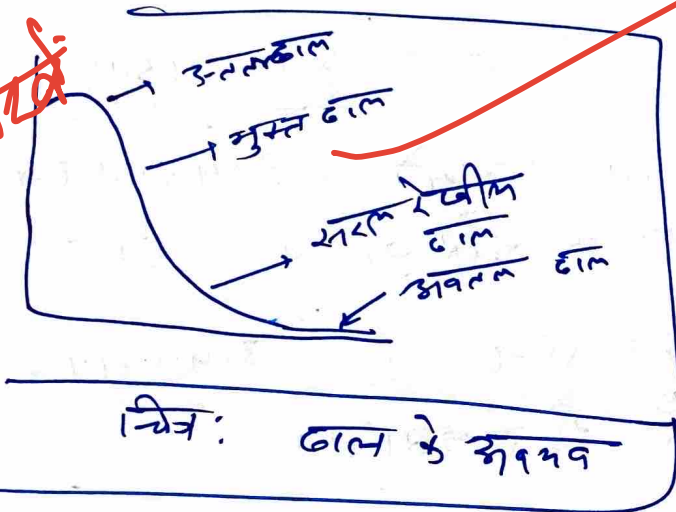
उम्मीदवारों को इस हाशिए में नहीं लिखना चाहिए!
 Candidates must not write on this margin.

56

दलान प्राकृतिकों के नियंत्रण पर एक संक्षिप्त टिप्पणी लिखिये।

पुनरावृत्ति
 भूमिकी
 लिखें

दलान का निर्माण एक निरन्तर प्रक्रिया है जिसमें दलान का निर्माण = विकास एवं अपरदन होना रहता है।



चित्र: दाल के प्रकार

दलान का विकास एक दीर्घकालिक प्रक्रिया है।

दाल प्रक्रिया का नियंत्रण -

1. दाल के विकास में सर्वप्रथम उत्तल दाल पर अपरदन प्रक्रिया आरम्भ होती है जिसे नियंत्रित स्टेज आगे की प्रक्रिया शीघ्र जा सकती है।
2. मुक्त दाल वह क्षेत्र है जहाँ पर कोई भी अवसाद नहीं ठहरता है

(Please do not write anything except the question number in this space)
कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें!

UPSC

Answer Questions in NOT MORE THAN the Word Limit specified for each in the Parenthesis.
Content of the Question is more important than length.
(Specimen Answer Booklet - For Practice Purpose Only)

उम्मीदवारों को इस हाशिए में नहीं लिखना चाहिए!
Candidates must not write on this margin

रक्त रीढ़ी शरत् रीढ़ी दाल तक पहुँच जाता है। इसके फल मानव का आधिक नियंत्रण नहीं है।

3. शरत् रीढ़ी दाल पर व्यक्ति द्वारा तटबंध अथवा पेड़ लगाकर नियंत्रण किया जा सकता है क्योंकि सभी प्रकार का अवसाद यही जमा होता है।

4. ~~शरत् रीढ़ी दाल पर क्षेत्र है जहाँ मोनाडनास पधे जाते हैं। यह क्षेत्र धीरे-धीरे विस्तृत होता है रक्त क्षेत्र में केवल यही क्षेत्र क्षयता है।~~

~~समान्तर निर्वर्तनी क्रिया द्वारा होने वाले उन्नत दाल को रोकर दाल विकास पर नियंत्रण किया जा सकता है।~~

दाल का विकास बृहत्तलन की दिशा में एक कदम होता है जिससे उत्प्रेरक भाग में परिवर्तन दिखाई देता है।

9/10

Handwritten notes in red ink on the right margin, including arrows and text like 'रक्त रीढ़ी', 'मोनाडनास', 'क्षेत्र', 'विस्तृत', 'क्षयता', 'समान्तर', 'निर्वर्तनी', 'क्रिया', 'दाल', 'विकास', 'नियंत्रण', 'दिशा', 'परिवर्तन', 'दिखाई'.

Handwritten notes in red ink on the left margin, including arrows and text like 'दाल', 'क्षेत्र', 'मोनाडनास', 'क्षयता', 'समान्तर', 'निर्वर्तनी', 'क्रिया', 'दाल', 'विकास', 'नियंत्रण', 'दिशा', 'परिवर्तन', 'दिखाई'.

(Please do not write anything except the question number in this space)
कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें!

UPSC

Answer Questions in NOT MORE THAN the Word Limit specified for each in the Parenthesis.
Content of the Question is more important than length.
(Specimen Answer Booklet - For Practice Purpose Only)

उम्मीदवारों को इस हाशिए में नहीं लिखना चाहिए!
Candidates must not write on this margin.

5

भू-पर्पटी की उत्पत्ति एवं विकास पर एक संक्षिप्त टिप्पणी लिखिए।

~~भूपर्पटी का निर्माण सिलिकेट, काल्शियम से हुआ है एवं यह लगभग 200 डिग्री. जेडराई तक का क्षेत्र है।~~

परिष्कृत

मूल और

लपट का

लक्षण

है

भूपर्पटी की उत्पत्ति एवं विकास -

- ~~पृथ्वी के उत्पन्न होने पर (13.7 बिलियन वर्ष पूर्व) यह अत्यधिक गर्म अवस्था में थी~~
- ~~समयान्तराल में तप धीरे-धीरे कम हुआ एवं इससे पृथ्वी का आकार कम हुआ~~
- ~~पृथ्वी का आकार कम होने से पृथ्वी की घूर्णन गति में कमी आयी है एवं पृथ्वी का घूर्णन काल (0.8 घंटे से बदलकर 24 घंटे हो गया)~~
- इस क्रमिकता में प्रथमः पृथ्वी से

(Please do not write anything except the question number in this space)
 कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

UPSC

Answer Questions in NOT MORE THAN the Word Limit specified for each in the Parenthesis.
 Content of the Question is more important than length.
 (Specimen Answer Booklet - For Practice Purpose Only)

उम्मीदवारों को इस हाशिए में नहीं लिखना चाहिए!
 Candidates must not write on this margin.

विस्फोटन
 पदार्थों के
 अलग-अलग
 तत्व
 अलग-अलग
 पदार्थों के
 निर्माण

निर्माण जैसे 'काँचर' जिससे पृथ्वी का आन्तरिक वातावरण काँच ठंडा होने लगा।

इसके बाद पृथ्वी के धनत्व-आधारित तत्व विघटित होने लगे एवं धीरे-धीरे परत रूप में विकसित हुए।

इस तरह धीरे-धीरे क्रस्ट, मेटल व कोर का निर्माण हुआ।



चित्र: क्रस्ट का विकास

क्रस्ट का विकास केवल कुछ वर्षों में नहीं अपितु लाखों वर्षों में हुआ है जो आज भी आतिमान हैं एवं परिवर्तनशील हैं।

4/10

कॉपी
 लगा है
 ठीक है

(Please do not write anything except the question number in this space)
 कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें!

UPSC

Answer Questions in NOT MORE THAN the Word Limit specified for each in the Parenthesis.
 Content of the Question is more important than length.
 (Specimen Answer Booklet - For Practice Purpose Only)

उम्मीदवारों को इस हाशिए में नहीं लिखना चाहिए!
 Candidates must not write on this margin.

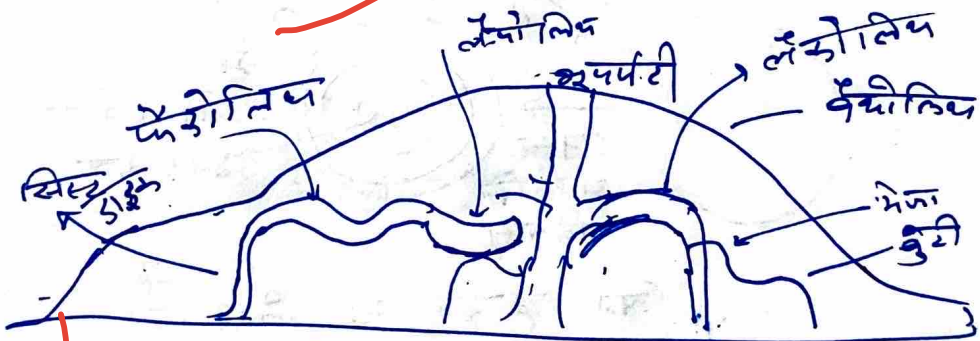
5 a

ज्वालामुखीयता से सम्बन्धित अंतर्भेदी भू-आकृतियों पर चर्चा कीजिए।

भू-सिक्ता
 चिह्न
 चिह्न

ज्वालामुखी से आशय उन चिह्न से है जिससे मैग्मा बाहर निकलकर लगेवा बन जाता है। यह उभिया ज्वालामुखीयता कहलाती है।

अंतर्भेदी भू-आकृतियाँ :-



चित्र : अंतर्भेदी भू-आकृतियाँ -

1. केंद्रीय शिखर - यह गुम्बदाकार आकृति है जिसका विशाल आकार होता है।

लेंकोलिय - उत्तल ढाल के आकार की आकृति जो केंद्रीय शिखर की तुलना में छोटी होती है।

चिह्न
 चिह्न

(Please do not write anything except the question number in this space)
 कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें!

UPSC

Answer Questions in NOT MORE THAN the Word Limit specified for each in the Parenthesis.
 Content of the Question is more important than length.
 (Specimen Answer Booklet - For Practice Purpose Only)

उम्मीदवारों को इस हाशिए में नहीं लिखना चाहिए!
 Candidates must not write on this margin.

3. लैंपोलिथ - यह लहररी गुमा आकृति होती है।

4. फैकोलिथ - यह लहरदार आकृति है जो कि लैंकोलिथ एवं लैंपोलिथ का संयुग्म है।

5. डाइक - यह सीधी खड़ी लम्बकत आकृति है। जब मैग्मा सीधी लम्बकत रूप में जमा हो जाता है तो इस तरह की आकृति बनती है।

विषय (7)
 को लहरदार
 गुंथे हुए

अतः ज्वालामुखी भू-चपटी के अनेक स्थलाहतियों का निर्माण करता है एवं कण्डर भी सिद्ध होते हैं, जैसे व फुटारे बनते हैं।

4.5
 12

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें!

UPSC

Answer Questions in NOT MORE THAN the Word Limit specified for each in the Parenthesis.
Content of the Question is more important than length.
(Specimen Answer Booklet - For Practice Purpose Only)

उम्मीदवारों को इस हाशिए में नहीं लिखना चाहिए!
Candidates must not write on this margin.

50
स्प्राइलर के अनच्छादन कालानुक्रम के मॉडल पर संक्षिप्त टिप्पणी लिखिये।

अनच्छादन कालानुक्रम वह प्रक्रिया है जिसके माध्यम से किसी विशेष स्तर के वारे के भूकाल एवं वर्तमान का पता लगाया जाता है।

अनच्छादन कालानुक्रम :-

1. इसके अन्तर्गत किसी विशिष्ट स्थलाकृति पर उपासित प्रतिदर्श का अध्ययन किया जाता है।
2. जिस तरह से इन स्थलाकृतियों का इस स्थल पर निर्माण हुआ है।
3. प्रत्यक्ष अथवा अप्रत्यक्ष साक्ष्यों का सहारा लेकर एक सामान्य विश्लेषणात्मक मॉडल तैयार करने की कोशिश की जाती है कि इस स्थलाकृति का निर्माण का तरीका एवं प्रक्रिया क्या थी।

(Please do not write anything except the question number in this space)
 कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें!

UPSC

Answer Questions in NOT MORE THAN the Word Limit specified for each in the Parenthesis.
 Content of the Question is more important than length.
 (Specimen Answer Booklet - For Practice Purpose Only)

उम्मीदवारों को इस हाशिए में नहीं लिखना चाहिए!
 Candidates must not write on this margin.

वर्तमान के शूकाल की कुंजी मानकर ही किसी स्थलाहति के बारे में जानने का प्रयास किया जाना चाहिए।

पॉलिम्य सेह्य स्थलाहति वह स्थलाहति होती है जो भारत वार उत्पित क्षपरदित होती है एवं अनिष्य में इस के लिए तैयार रहेगी।

इस तरह से विभिन्न मॉडल नामान्यतः किसी व्यक्ति की निम्नलिखित बातों पर आधारित होगी।

अनाच्छादान कोलानुक्रम के आधार पर इट्रालर किसी क्षेत्र की स्थलाहतियों के विकास पुनर्निमित्त करने की कोशिश करते हैं।

इसका उत्तर 500
 3-4 दोनो प्रश्न की उत्तर की गति
 6 मिनट 1000 वर्ड है

35
 10

Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें!

UPSC

Answer Questions in NOT MORE THAN the Word Limit specified for each in the Parenthesis.
Content of the Question is more important than length.
(Specimen Answer Booklet - For Practice Purpose Only)

उम्मीदवारों को इस हाशिए में नहीं लिखना चाहिए!
Candidates must not write on this margin.

6
9
भू-संतुलन या समस्थिति की अवधारणा को परिभाषित कीजिये तथा एचरी तथा फार के सिद्धांत की चर्चा कीजिये।

भूमिका
हुक
है

समस्थिति के कारण
भू-संतुलन की अवस्था में है। प्रकृति
के विभिन्न कारणों व अन्तःजात
प्रक्रमों के द्वारा समस्थिति प्राप्त
करने का प्रयास किया जाता है।

एचरी का विचार :-

1. एचरी के अनुसार भू-संतुलन की स्थिति में सभी स्थलाकृतियों का विशेष योगदान है।
2. उन्होंने लकड़ी के चार टुकड़ों को लेकर जल के डुबोया। उन्होंने पाया कि लकड़ी के सभी टुकड़े सफेद आकार के अनुसार पानी में नीचे तक जाते हैं।
3. एचरी के अनुसार पृथ्वी का मैदान, पहाड़ व चट्टान का घनत्व समान है।
4. यदि प्रयोग उन्होंने लकड़ी के टुकड़ों

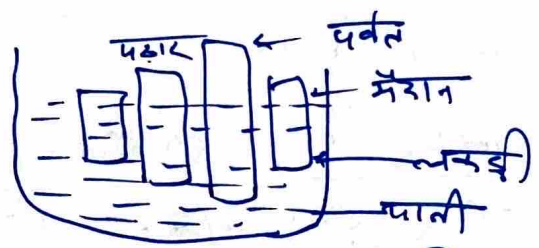
(Please do not write anything except the question number in this space)
 कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें!

UPSC

Answer Questions in NOT MORE THAN the Word Limit specified for each in the Parenthesis.
 Content of the Question is more important than length.
 (Specimen Answer Booklet - For Practice Purpose Only)

उम्मीदवारों को इस हाशिए में नहीं लिखना चाहिए!
 Candidates must not write on this margin.

(त्रिज्या - त्रिज्या आधार) के पारे में डुकोकर डिजा।



एक पार

पर्वत की ऊँचाई

में

कम हो

जाता है

उपरोक्त

गहराई

चित्र : एचरी के अनुसार समस्थिति

5. इनके अनुसार कोई स्थलाहति पृथ्वी की (ऊँचाई) ऊपर है वह उतनी ही नीचे जाकर स्वयं को संतुलित करती है। अतः पर्वत आधी गहराई तक क्षांतरिक रूप से विस्तृत है।

अतः

एक पार के पारों में

पठार, पर्वत, मैदानों का घनत्व एक समान नहीं होता

2. भूपर्पटी प्लेटों के विभक्त हैं। इन प्लेटों एक दूसरे के सापेक्ष गति करती हैं ता कि SIAL SIMA पर तैरान की स्थिति में है

3. एचरी का नियार वास्तविकता के अनुरूप नहीं होगा।

(Please do not write anything except the question number in this space)
 कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें!

UPSC

Answer Questions in NOT MORE THAN the Word Limit specified for each in the Parenthesis.
 Content of the Question is more important than length.
 (Specimen Answer Booklet - For Practice Purpose Only)

उम्मीदवारों को इस हाशिए में नहीं लिखना चाहिए!
 Candidates must not write on this margin.

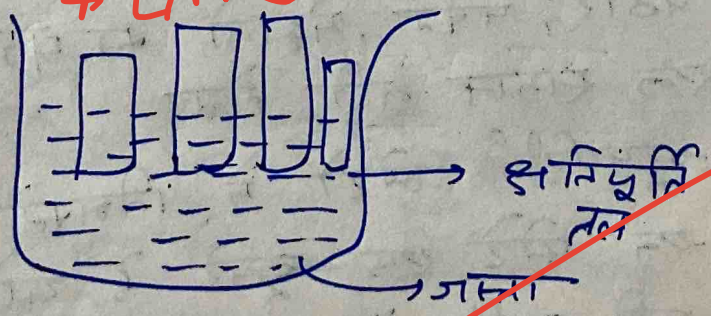
घाट का विचार -

1. घाट के अनुसार सभी श्रृंखलों का धनत्व असमान है।

2. उन्होंने लेड, लॉट, सरीसर्पिका जस्ता के चार टुकड़े लेकर घाट में डुबोया। इनका भार समान था किंतु आकार अलग-अलग।

3. ये टुकड़े जस्ते के एक निश्चित तल तक डूबते हैं। घाट के इस तल को अग्निपूर्ति तल कहा।

अग्निपूर्ति तल सभी के लिए समान है एवं इसके नीचे में रूपा है।



चित्र: घाट द्वारा समन्वयित

शालोचना -

1. होम्स के अनुसार अग्निपूर्ति तल तक श्रृंखलों को पिघल जाना चाहिए

घनत्व
 अनुपात
 चतुर्भुज
 3-11 कर्मि
 अजना
 निष्पत्ति
 37 चार्ज
 प्राप्ति कर्तव्य

(Please do not write anything except the question number in this space)
कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें!

UPSC

Answer Questions in NOT MORE THAN the Word Limit specified for each in the Parenthesis.
Content of the Question is more important than length.
(Specimen Answer Booklet - For Practice Purpose Only)

उम्मीदवारों को इस हाशिए में नहीं लिखना चाहिए!
Candidates must not write on this margin.

2. एक काल्पनिक क्षतिपूर्ति तल की अवधारणा जो शायद प्रार की निगमनात्मक मनो - उपज थी।

⇒ ~~ईकोड और खोबी ने प्रार के विचार का समर्थन दिया और कहा कि क्षतिपूर्ति तल 100 km. पर होता है।~~

व) वडी होम्स ने संवहन दरंगों के माध्यम से प्रथरी के विचारों का समर्थन दिया।

~~कंटेर की लक्षण मुख्य की श्वान्तिक संरचना के बारे में अभी बहुत उब पता लगाना बाकि है। प्रथरी व प्रार ने एलेट विवर्तनी के अध्ययन हेतु एक मार्ग दिखाने का कार्य किया।~~

10
20

(Please do not write anything except the question number in this space)
कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें!

UPSC

Answer Questions in NOT MORE THAN the Word Limit specified for each in the Parenthesis.
Content of the Question is more important than length.
(Specimen Answer Booklet - For Practice Purpose Only)

उम्मीदवारों को इस हाशिए में नहीं लिखना चाहिए!
Candidates must not write on this margin.

6) (b) समुद्री लहरों द्वारा निर्मित विभिन्न अपरदनात्मक स्थलाकृतियों का वर्णन कीजिए।

परिच्छिन्न
होकर है

समुद्री लहरों एक महत्वपूर्ण अपरदनात्मक कारक हैं जो समुद्री तट पर परिवर्तन लाने में सक्षम हैं।
सार्वभौमिक समुद्री सीमा 7516.8 किमी है।

~~समुद्री लहरों के द्वारा अपरदन से निर्मित स्थलाकृतियाँ :-~~

- क्लिफ :-
- समुद्री लहरों जब तट से टकराती हैं तो अपक्षय द्वारा धीरे-धीरे तट की ऊपरी सीमा क्लिफ में परिवर्तित हो जाती है।
- यह एक तरह का खड़ा ढाल होता है।
- पेवमेंट :-
- क्लिफ के द्वारा शिवालियों का

(Please do not write anything except the question number in this space)
 कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें!

UPSC

Answer Questions in NOT MORE THAN the Word Limit specified for each in the Parenthesis.
 Content of the Question is more important than length.
 (Specimen Answer Booklet - For Practice Purpose Only)

उम्मीदवारों को इस हाशिए में नहीं लिखना चाहिए!
 Candidates must not write on this margin.

जमाव निचली सतह पर हो जागा है
 इस तरह से एक पैकेट का निर्माण
 होगा है।

3. गुफा -

अभि
 का

तरंग वायु
 संवेग का

वैदिक

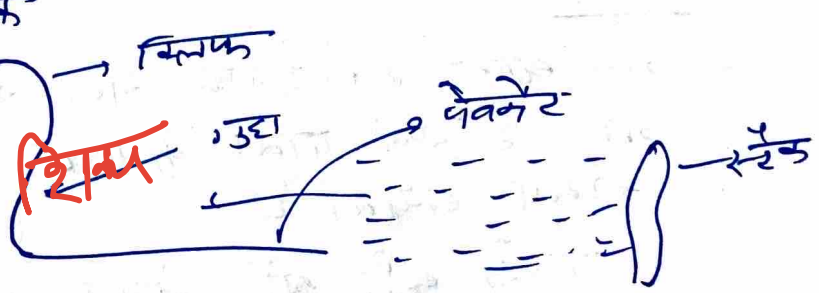
- जो उन ने

- वात चिह्न

सुदूर लहरों द्वारा निक्षेपण के निर्मित
 स्थलाकृति :-

गरीब चट्टानों के अपरदन से
 जब सतही चट्टानों अल्पविकसित गुलाबक
 एवं इली चट्टानों बहार से लगे
 निर्माण से निचली चट्टानों पर
 गती है। इस तरह गुहा का निर्माण
 होता है।

4. स्टैक



चित्र: लहरों द्वारा अपरदन से निर्मित
 स्थलाकृति

1. कार :-

- ये अवसादों के निक्षेपण से निर्मित
 होते हैं।

(Please do not write anything except the question number in this space)
 कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें!

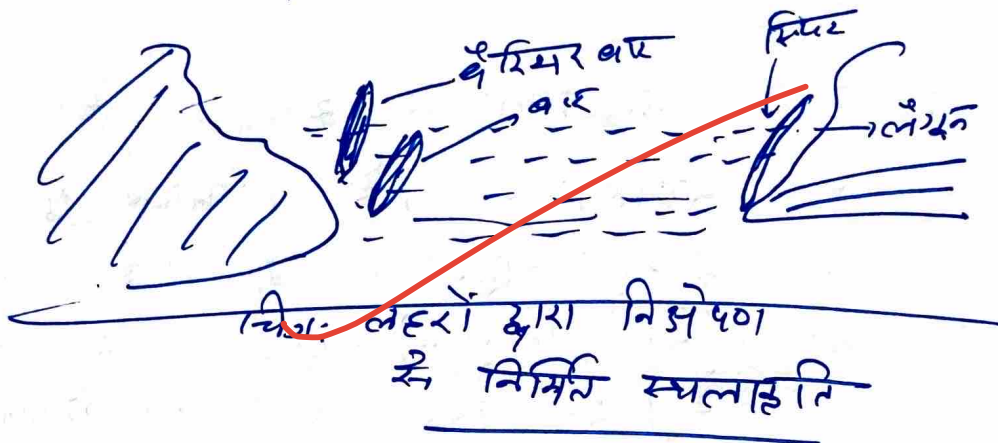
UPSC

उम्मीदवारों को इस हाशिए में नहीं लिखना चाहिए!
 Candidates must not write on this margin.

Answer Questions in NOT MORE THAN the Word Limit specified for each in the Parenthesis.
 Content of the Question is more important than length.
 (Specimen Answer Booklet - For Practice Purpose Only)

2. वैरियर वार -

- जब वार समुद्री सतह पर दिखने लगते हैं तो इसके वैरियर वार का निर्माण होता है।



3. स्पिर :-

- जब वार महादीपीय सतह से लगे जाते हैं एवं पानी के लिए रुक रास्ता बचता है
 - इस के वरि-धीरे लंगून बन जाते हैं जिन्हें समुद्री पानी उकेरा कर

~~कट्टे की~~
~~लंगरुन~~ ठीक है

समुद्री लहरों कायक सतह पर स्थलाकृतियों को प्रभावित करती है एवं निरन्तर परिवर्तन द्वारा विकास में योगदान देती है।

6.5
 15

(Please do not write anything except the question number in this space)
 कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें!

UPSC

Answer Questions in NOT MORE THAN the Word Limit specified for each in the Parenthesis.
 Content of the Question is more important than length.
 (Specimen Answer Booklet - For Practice Purpose Only)

उम्मीदवारों को इस हाशिए में नहीं लिखना चाहिए!
 Candidates must not write on this margin.

6
 C

“भू-अभिनति” से आपका क्या अभिप्राय है?
 कोबर की जियोसिक्लिज और जेन सिद्धान्त का वर्णन कीजिये।

भूमिका
 ठीक है

हॉल व डाना के अनुसार
 भू-सन्नति लम्बे, संकरे व उथले स्तर स्तर स्तर निरन्तर घेसते हुए आता है।

टाग के अनुसार भूसन्नतियों की लम्बाई की तुलना में चौड़ाई कम होती है।

कोबर का भू-अभिनति भोजन सिद्धान्त:-

- कोबर के अनुसार भू-अभिनतियाँ अन्तःपर्वत का निर्माण करती हैं। पर्वत निर्माण की निम्न तीन अवस्थाएँ होती हैं।

1. पर्वत निर्माण की प्रथम अवस्था:-

- इस अवस्था में भू-अभिनति में अवसादों की मात्रा धीरे-धीरे बढ़ने लगती है।

- अवसादों में वृद्धि के कारण भू-अभिनति का लम्बवत परिवर्तन

लिखने वाले
 लिख
 अवस्था

(Please do not write anything except the question number in this space)
 कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें!

UPSC

Answer Questions in NOT MORE THAN the Word Limit specified for each in the Parenthesis.
 Content of the Question is more important than length.
 (Specimen Answer Booklet - For Practice Purpose Only)

उम्मीदवारों को इस हाशिए में नहीं लिखना चाहिए!
 Candidates must not write on this margin.

होता है एवं भू-अग्निनिक्षेपों की लम्बाई में वृद्धि करती है।

- इस अवस्था में शैलियाँ बल अधिक कार्य नहीं करती हैं।

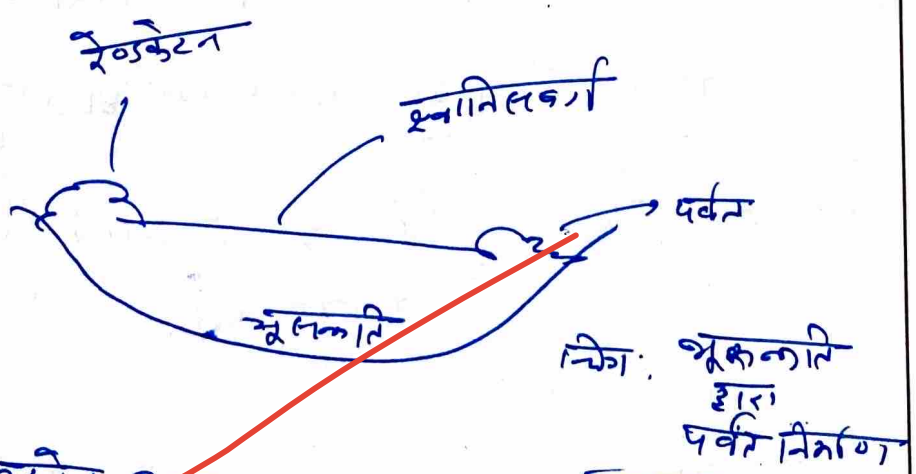
② पर्वत निर्माणकारी अवस्था

- लम्बकाल परिवर्तन के बाद शैलियाँ बल अधिक कार्य करने लगती हैं।

- इस अवस्था में अपसादों की अधिक जमाव के कारण भू-अग्निनिक्षेप संतुप्त हो जाती हैं।

- शैलियों के कारण पर्वतों का निर्माण होता है।

~~आरंभ में शैलियाँ~~
~~अवस्था~~



- कठोर भूखण्ड इन बलों से उत्पन्न होते हैं जिन्हें श्वानिलक कहते हैं।

(Please do not write anything except the question number in this space)
 कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें!

UPSC

Answer Questions in NOT MORE THAN the Word Limit specified for each in the Parenthesis.
 Content of the Question is more important than length.
 (Specimen Answer Booklet - For Practice Purpose Only)

उम्मीदवारों को इस हाशिए में नहीं लिखना चाहिए!
 Candidates must not write on this margin.

- कोनों पर चलन से पर्वत निर्माण होता है जिसे रेडक्लेटन कहते हैं।

(3) पर्वत विकास अवस्था :-

Handwritten notes:
 तिलिपा के बालिन
 हादला

इस अवस्था में भू-भ्रमणित का ऊवसाद अत्यधिक महाराई में पाए जाते हैं।

इस गहराई तक इनका किनाशा होने लगता है। मैंगला में मैंगला निर्माण से मैंगला ऊध्वधिर गति करता है एवं इससे पर्वतों का संचलन होता है। इनकी ऊपर की वृद्धि होती है।

कालोचना :-

1. पर्वत निर्माण की आवश्यकता - भू भ्रमणित
2. काठिन श्वानिसर्ग, रेडक्लेटन - समझने में डुरुट

Handwritten notes:
 पर्वतों की अवस्था

3. धवसादों की अत्याधिक मात्रा की आवश्यकता - अनेक पर्वतों की व्याख्या नहीं कर पाता जैसे - ज्वालामुखी पर्वत

अतः कोकर ने पर्वत निर्माण के लिए एक आधारभूत सिद्धान्त प्रस्तावित किया।

6.5
 15

(Please do not write anything except the question number in this space)
कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें!

UPSC

Answer Questions in NOT MORE THAN the Word Limit specified for each in the Parenthesis.
Content of the Question is more important than length.
(Specimen Answer Booklet - For Practice Purpose Only)

उम्मीदवारों को इस हाशिप में नहीं लिखना चाहिए!
Candidates must not write on this margin.

8
9
जैसे-2 विभिन्न अपरदन कारक पृथ्वी की सतह पर कार्य करते हैं, भू-आकृतियों का एक व्यवस्थित अनुक्रम उत्पन्न होता है। चर्चा कीजिये।

भू-आकृतियों की उत्पत्ति एवं व्यवस्थापन विभिन्न अपरदन कारकों के प्रभाव द्वारा अध्ययन किया जाता है। भू-आकृतियाँ, पृथ्वी के विशेष भूखण्ड होती हैं।

भू-आकृति के विकास के प्रभावित करने वाले कारक :-

- क्लिमेट के अनुसार कोई एक कारक हर जगह के लिए विकास कार्य नहीं कर सकता।
- अनेक कारकों के सम्मिलित परिणाम के ही भू-आकृति उत्पन्न होती है।

1. भू-आकृतिक संरचना -

- थॉर्नबरी के अनुसार भू-आकृति की संरचना का उसके विकास पर बहुत प्रभाव पड़ता है।

2. जलवायु :-

- केरेकस के अनुसार जलवायु अपने विशिष्ट

भूमिका
जैसे-2
जैसे-2
जैसे-2

(Please do not write anything except the question number in this space)
 कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें!

UPSC

Answer Questions in NOT MORE THAN the Word Limit specified for each in the Parenthesis.
 Content of the Question is more important than length.
 (Specimen Answer Booklet - For Practice Purpose Only)

उम्मीदवारों को इस हाशिए में नहीं लिखना चाहिए!
 Candidates must not write on this margin.

संयोजन से भू-आकृति को उत्क्रांति कहते हैं।

3. समय -

- डेक्सि डे अनुसार भू-आकृतियाँ, संरचना, समय व प्रक्रम का प्रतिफल है।

4. ऊर्जा -

अन्तःजात ऊर्जा - भूकम्प, ज्वालामुखी

बाह्य ऊर्जा - अपरदन, निक्षेपण

5. अलवायु उच्चावच :-

उच्चावच के कारण ढाल विकास
 ढाल प्रतिस्थापन

6. जैविक कारण -

मानव व जीव अन्तःक्रो से द्वारा उत्क्रांति

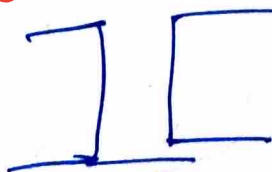
अपरदन से भू-आकृतियों पर उत्क्रांति :-

वहने हुए जल द्वारा अपरदन से -

घाट होल, प्लेज एल आदि का निर्माण

नदी वेदिका का निर्माण

नदी घाटियों - गॉर्ज, डैनेयक का निर्माण



गॉर्ज



डैनेयक



घाट होल



प्लेज एल

उत्क्रांति के
 सिद्धांत की
 उत्पत्ति
 में चर्चा
 कर सकते
 हैं।

स्तरीक
 चर्चा
 का
 प्रयत्न
 है।

(Please do not write anything except the question number in this space)
 कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें!

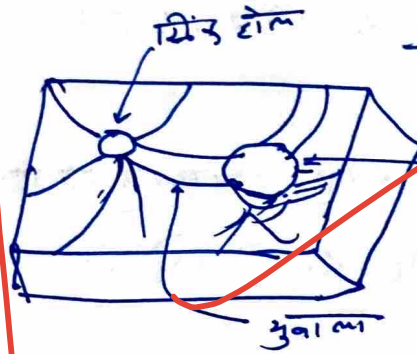
UPSC

Answer Questions in NOT MORE THAN the Word Limit specified for each in the Parenthesis.
 Content of the Question is more important than length.
 (Specimen Answer Booklet - For Practice Purpose Only)

उम्मीदवारों को इस हार्शिए में नहीं लिखना चाहिए!
 Candidates must not write on this margin.

2. भौमजल के :-

- टेल्लेग्रॉफ
- सिंक होल
- स्ट्रेलिंग
- कालिप्स सीड होल (डोलाइन)
- रसीड घाटी (युवाला)
- लैपीज
- कॉम्पेस सिड

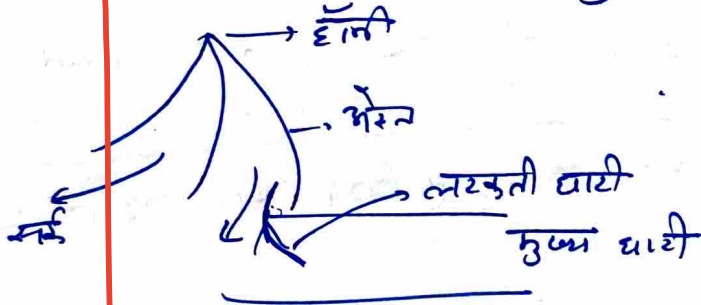


निग. भौमजल के निर्मित अपरदिन स्थलाकृति

त्रिआसो
दुई
दुई

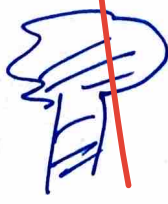
3. हिमनद द्वारा अपरदन के :-

- टॉर्न
- अरेन
- सर्स
- लटकती हुई घाटी

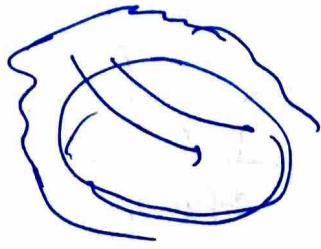


4. पवन द्वारा -

- रलाचा
- छत्रक शिला
- पेडीमेंट, इन्सेलवर्ग



छत्रक शिला



रलाचा



इन्सेलवर्ग

(Please do not write anything except the question number in this space)
 कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें!

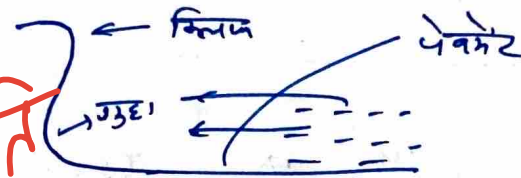
UPSC

Answer Questions in NOT MORE THAN the Word Limit specified for each in the Parenthesis.
 Content of the Question is more important than length.
 (Specimen Answer Booklet - For Practice Purpose Only)

उम्मीदवारों को इस हाशिए में नहीं लिखना चाहिए!
 Candidates must not write on this margin.

5. समुद्री तरंगे -

- क्लिफ
- गुफा
- पेनमेर



चित्र: समुद्री तरंगों द्वारा अपरदन के निरर्कित स्थलाहति

सतपको
 भू-आकृति
 चक्र की अवधारणा
 अपरदन द्वारा भू-संतुलन कायम करने में निहित प्रयास किया जाता है।
 विभिन्न क्षेत्रों में अपरदन से नवीन स्थलाहतियाँ जन्म लेती हैं।
 अपरदन के बाद परिवर्तन व निक्षेपण की प्रक्रिया द्वारा किसी स्थल का विकास होता है।

कोई भी स्थलाहति अपरदन, निक्षेपण का सम्मिलित प्रभाव होती है जिसके आधार पर उसका वर्गीकरण किया जाता है। इन सबमें समग्र एक महत्वपूर्ण कारक है।

9
 2:0

(Please do not write anything except the question number in this space)
 कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें!

UPSC

उम्मीदवारों को इस हाशिए में नहीं लिखना चाहिए!
 Candidates must not write on this margin.

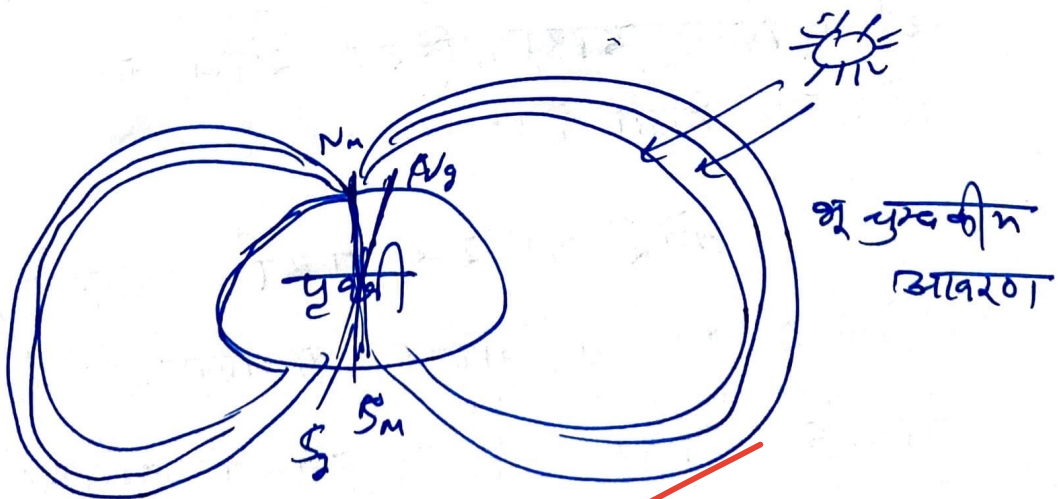
Answer Questions in NOT MORE THAN the Word Limit specified for each in the Parenthesis.
 Content of the Question is more important than length.
 (Specimen Answer Booklet - For Practice Purpose Only)

8 6 'शु - चुम्बकत्व की अवधारणा को समझाइए। पृथ्वी के चुम्बकीय उत्तरी-दक्षिण ध्रुवों के परिवर्तन के प्रभाव पर चर्चा कीजिए।

शुम्बकत्व
 चुम्बकीय

पृथ्वी के वाह्य कोर में स्वीय या अर्द्धोत्तल अवस्था के कारण संवहन तरंगें उत्पन्न होती हैं। इन पृथ्वी शक्ति युक्त की तरह संवहन करती हैं। इसे शुम्बकत्व कहते हैं।

शुम्बकत्व की अवधारणा :-



Waxing or Wanning प्रवाही

पृथ्वी का शुम्बकत्व

(Please do not write anything except the question number in this space)
 कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें!

UPSC

Answer Questions in NOT MORE THAN the Word Limit specified for each in the Parenthesis.
 Content of the Question is more important than length.
 (Specimen Answer Booklet - For Practice Purpose Only)

उम्मीदवारों को इस हाशिए में नहीं लिखना चाहिए!
 Candidates must not write on this margin.

- पृथ्वी के चुम्बकीय ध्रुव इसके भौगोलिक ध्रुवों से भिन्न हैं।
- इनमें सामान्यतः 11 का कोण पाया जाता है।
- पृथ्वी के ये ध्रुव कनेड लाख वर्षों में व्युत्क्रमित हो जाते हैं। 1 लाख वर्ष में इस परिवर्तन को ध्रुवीय घटना एवं 10 लाख साल में परिवर्तन को Epoch reversals कहते हैं।
- सूर्य के waxing व waning चक्र का भी पृथ्वी के भू-चुम्बकत्व पर प्रभाव पड़ता है।
- सूर्य की हानिकारक विकिरणों से भू-चुम्बकीय आवरण हमारी रक्षा करता है।
- भू-चुम्बकत्व के मापन से विशेष समय पर पृथ्वी की चुम्बकीय का मापन सम्भव है।
- यह मुख्यतः डायनेमो सिद्धांत एवं चुम्बकीय सिद्धांत (घर्बन के कारण) के आधार पर उत्पन्न होता है।

पृथ्वी के चुम्बकीय ध्रुवों की

मापन शीला

उत्पन्न होता है।
 9 किमी (दूरी)

(Please do not write anything except the question number in this space)
कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें!

UPSC

Answer Questions in NOT MORE THAN the Word Limit specified for each in the Parenthesis.
Content of the Question is more important than length.
(Specimen Answer Booklet - For Practice Purpose Only)

उम्मीदवारों को इस हाशिए में नहीं लिखना चाहिए!
Candidates must not write on this margin.

उत्तरी ध्रुव (युम्बकीय) में हाल के परिवर्तन:-

- पृथ्वी का युम्बकीय उत्तरी ध्रुव समतलरूप विलम्बित होता रहा है।
- यह परिवर्तन विभिन्न कारणों पर निर्भर करती है जैसे - सौर क्लेयर एवं किसी उल्कापिण्ड का टकराना।

उत्तरी ध्रुव

भौगोलिक

उत्तरी

ध्रुव

की वृद्धि

तकनीक

पर्याप्त

का माप

युम्बकीय उत्तरी ध्रुव एवं दक्षिणी ध्रुव शांत में रहते हैं एवं भौगोलिक ध्रुवों से सामान्यतः दूरी बनाए रखते हैं।

वर्तमान में युम्बकीय उत्तरी ध्रुव भौगोलिक उत्तरी ध्रुव से लगभग 11

किमी की दूरी पर है।
अतः युम्बकीयता पृथ्वी का प्रतिबलपूर्ण गुण है जिसके कारण पृथ्वी उच्च ध्रुव गठन बन पाया है किन्तु जलवायवीय कारणों के कारण इसमें तीव्र परिवर्तन होने लगे हैं।

संशोधन

6
15

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें!

UPSC

Answer Questions in NOT MORE THAN the Word Limit specified for each in the Parenthesis. Content of the Question is more important than length. (Specimen Answer Booklet - For Practice Purpose Only)

उम्मीदवारों को इस हाशिए में नहीं लिखना चाहिए! Candidates must not write on this margin.

8
C

विवर्तनिक भूल के भूकंप सर्वाधिक विनाशकारी सिद्ध हुए हैं, तथा इनका प्रभाव क्षेत्र भी विस्तृत रहा है। व्याख्या कीजिये।

भूमिका
गुण
रूप

वर्तमान में भूकम्प की आवृत्ति में वृद्धि हो रही है। हाल ही में उत्तरी भारत में 5.8 तीव्रता का भूकम्प देखने को मिला जिसका फोकल अक्षांश 30° में था। भूकम्प से सामान्य आशय भू-पर्पटी में उत्पन्न से है।

- भूकम्प, प्राकृतिक एवं मानवीय कारकों से हो सकते हैं।
- हाल ही में विवर्तनिकी कारणों से आने वाले भूकम्पों की आवृत्ति भी बढ़ी हुई।

विवर्तनिकी भूकम्प का उदाहरण :-

1. प्लेटों के आपसी घर्षण से उत्पन्न जैसे - हाल ही में रबी व सीरिया में आया भूकम्प यूरेशियन प्लेट का इरेकियन क्षेत्र के आपसी संघर्ष से था।

(Please do not write anything except the question number in this space)
 कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें!

UPSC

Answer Questions in NOT MORE THAN the Word Limit specified for each in the Parenthesis.
 Content of the Question is more important than length.
 (Specimen Answer Booklet - For Practice Purpose Only)

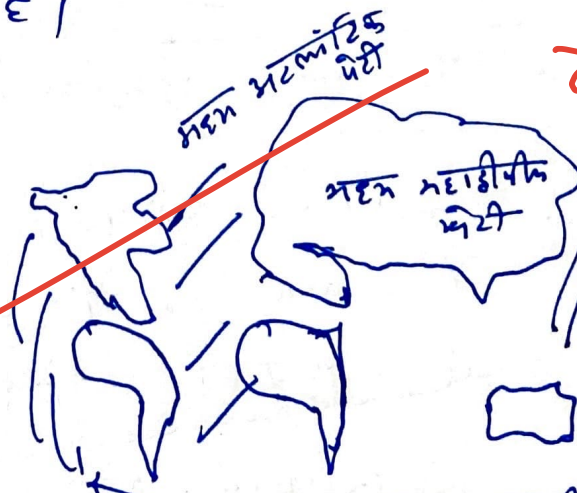
उम्मीदवारों को इस हाशिए में नहीं लिखना चाहिए!
 Candidates must not write on this margin.

1. चले विस्तृत क्षेत्र में फैली होती है।
 अतः इनका प्रभाव भी व्यापक होता है जैसे - टर्षी के भूकम्प का प्रभाव भारत तक देखा गया।

2. पृथ्वी पर भूतार्किक खण्ड :-

- इससे पृथ्वी की चोटों में अखण्डन की स्थिति पैदा हुई है एवं चोटों पहले की तुलना में अधिक विकृत गजर आ रही है।
- इनके प्रभावरूप में व्यापकता देखी जा रही है।

3. भारत का हाल ही में 5.8 रिक्टर स्केल पर आया भूकम्प विनाशकारी साबित हुआ है।



2. कम प्रभाव
3. अधिक प्रभाव
4. थोड़ा ज्यादा प्रभाव
5. भूतार्किक खतरनाक

चित्र: भूकम्पीय क्षेत्र

भारत में
 जम्मू, कश्मीर
 में दुर्घटना

भारतीय
 लिट
 युनिवर्सिटी
 लंसी
 इल
 उच्च
 शिक्षण

(Please do not write anything except the question number in this space)
 कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें!

UPSC

Answer Questions in NOT MORE THAN the Word Limit specified for each in the Parenthesis.
 Content of the Question is more important than length.
 (Specimen Answer Booklet - For Practice Purpose Only)

उम्मीदवारों को इस हाशिए में नहीं लिखना चाहिए!
 Candidates must not write on this margin.

- विक्टोरिनी भूमि क्षेत्रों की प्रायः रंग का परिणाम होते हैं। ये क्षेत्रों हजारों किमी. का विस्तृत क्षेत्र होते हैं जिससे भूमि का एक विस्तृत क्षेत्र के अनुभव किया जाता है।

- $\frac{2}{3}$ भूमि उदात्त महासागरीय भूमि पट्टी के अंतर्गत जो अत्यधिक संवेदीय क्षेत्र हैं।

- भारत में जोन I, III, IV, V में भूमि क्षेत्रों को वर्गीकृत किया गया है जिसमें जोन II अत्यधिक भूमि संवेदीय क्षेत्र हैं जिसमें भुज (गुजरात), उ. पूर्व का कुछ भाग व जम्मू कश्मीर का कुछ भाग आता है।

कटने के कारण
 जलदा
 होने के कारण
 व धूल को

अतः भूमि क्षेत्रों के नष्ट होने के लिए भली वाणिज्य सिस्टम को उन्नत करने और भूमि क्षेत्रों का मानकीकरण करने की आवश्यकता है।

65
 15